कान्हा की बांसुरी | by Subhangi Soni

बजे जब बंसी जमुना पार
तो सुनकर दौड़ी सब ब्रज नार
ऐसी बंसी वो बजाये कोई भी रोक ना पाये
कोई भी रोक ना पाए.....

राधे संग सखियाँ ढूंढें बनवारी को
छुपा कहाँ हैं देखो मदन मुरारी को
छेड़ के सबके मन के तार
जाए बैठ्यो अमुआ की डाल
बजे जब बंसी.....

काहे कान्हा तू इतना इठलावत है
हम सखियन को काहे बड़ा सतावत है
बुलाय के हमको जमुना पार
ये कितनो नटखट मदन मुरार
बजे जब बंसी.....

मन को धीरज हर कान्हा मुस्काये रयो
करके तंग हमें अब ये सैन चलाये रयो
काहे हमें ऐसे रयो निहार
मन में का चल रयो विचार
बजे जब बंसी.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a5%8d%e0%a4%b9%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%82%e0%a4%b8%e0%a5%81%e0%a4%b0%e0%a5%80-by-subhangi-soni/